Regarding inclusion of Sanskrit language as a Compulsory Subject in universities

श्री दिलीप शइकीया **(दारंग-उदालगुड़ी) :** सभापति महोदया, जयतु भारतम्, जयतु संस्कृतम् विकास भी, विरासत भी । आदरणीय प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में पिछले दस सालों में देश में विकास के साथ-साथ विरासत के संरक्षण और संवर्धन पर बड़ा जोर रहा है । भारत में सभी विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा को अनिवार्य विषय के रूप में मान्यता देने के लिए भारत सरकार का ध्यान आकर्षित कराना चाहता हूं । संस्कृत भाषा लोक भाषा भी है, इसका वैज्ञानिक आधार भी है और साइंटिफिक लैग्वेज भी है ।

विश्व में उपलब्ध भाषाओं में संस्कृत सबसे प्राचीनतम भाषा है, वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक प्राचीन भारतीय सभ्यता और संस्कृति का बहुत बड़ा भंडार भी इसी भाषा में है । आज पूरे विश्व में 50 से अधिक देशों में संस्कृत भाषा के प्रति रुचि बढ़ी है । अमेरिका, ब्रिटेन, जापान, चीन, जर्मनी, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड और नीदरलैंड समेत देशों में संस्कृत को अपने विश्वविद्यालय में भाषा के रूप में पढ़ाया जा रहा है । ब्रिटेन की ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी, अमेरिका की महर्षि यूनिवर्सिटी ऑफ मैनेजमेंट और नरोपा यूनिवर्सिटी, संस्कृत भाषा में पोस्ट ग्रेजुएट कोर्स प्रदान करता है । इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय ने भी हाल ही में संस्कृत में सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किया है ।

माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी ?मन की बात? में इस विषय को बहुत महत्व देकर बताया है । देशवासियों को संस्कृत भाषा को सम्मान देने और दैनिक जीवन में भी इसे अपनाने का आह्वान किया है ।

मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि नई शिक्षा नीति का अनुसरण करते हुए और आने वाली पीढ़ियों को भारतीय सभ्यता और संस्कृति की जानकारी देने के लिए देश के सभी विश्वविद्यालयों में संस्कृत भाषा को एक अनिवार्य विषय के रूप में मान्यता प्रदान करते हुए पाठ्यक्रम में शामिल करने हेतु उचित कार्रवाई करने का श्रम करें ।

सभी प्रदेशों में एक संस्कृत और पुरातन विश्वविद्यालय खोलने के विषय को सामने लाएं । मेरे जिले में कुमार भास्कर वर्मा संस्कृत और पुरातन विश्वविद्यालय है, इसे केन्द्रीय विश्वविद्यालय के रूप में घोषित करने का काम करें । मैं माननीय शिक्षा मंत्री जी को विशेष रूप से इस विषय की ओर ध्यान आकृष्ट कराता हूं । बहुत-बहुत धन्यवाद ।